ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

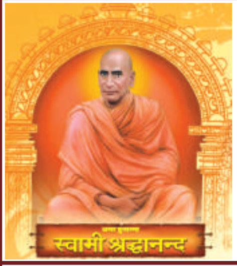

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज
94वें बलिदान दिवस पर
देशवासियों की ओर से
शत-शत नमन

वर्ष 44, अंक 5 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 दिसम्बर, 2020 से रविवार 27 दिसम्बर, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महान् धर्म रक्षक, शिक्षाविद्, सद्भावना-दूत और क्रान्तिकारी थे स्वामी श्रद्धानन्द

94वें बलिदान दिवस पर स्मरण करते हुए
स्वामी श्रद्धानन्द जी को शत-शत नमन

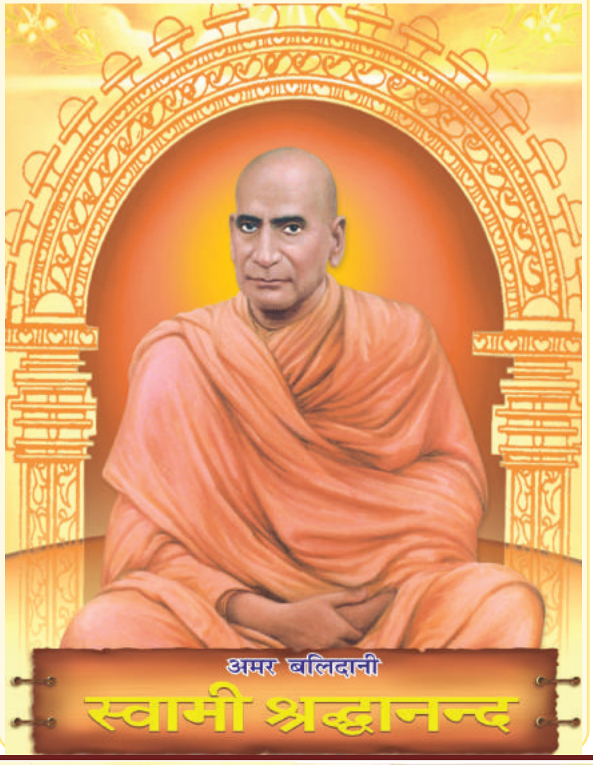

स्वयं को कल्याण मार्ग पर चलने वाला एक पथिक मानने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ने जब उसी नाम से अपनी आत्मकथा लिखकर ज्ञानमण्डल काशी से 1924 में प्रकाशित कराई तो साहित्य समीक्षकों की धारणा थी कि हिन्दी में आत्मकथा लेखन का इससे अधिक उत्कृष्ट ग्रन्थ कोई अन्य नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द यद्यपि जालन्धर जिले के तलवन नामक ग्राम में जन्मे थे तथा उनकी मातृभाषा पंजाबी थी, किन्तु वे हिन्दी के सुलेखक, पत्रकार तथा राष्ट्रभाषा के हिमायती नेता भी थे। हिन्दी साहित्य के भागलपुर अधिवेशन में अध्यक्ष पद पर अपना अभिभाषण देते हुए उन्होंने हिन्दी के अखिल भारतीय स्वरूप और उसकी राष्ट्र व्यापी मान्यता का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया था। वे सफल पत्रकार भी थे। पहले उन्होंने 'सद्धर्म प्रचारक' साप्ताहिक 1889 में उर्दू में निकाला किन्तु यह अनुभव करने पर कि हिन्दी माध्यम का पत्र उनके विचारों को अधिक जनता तक पहुँचा सकता है, उन्होंने 1907 में इसे हिन्दी में कर दिया। उन्होंने एक अन्य पत्र साप्ताहिक 'सत्यवादी' 1904 में निकाला तथा 'श्रद्धा' नामक मासिक का प्रकाशन 1920 में किया। अपने राजनीतिक विचारों के प्रसार के लिए उन्होंने अंग्रेजी में 'दि लिबरेटर' नामक पत्र का आरम्भ किया था। यह पत्र दीर्घजीवी नहीं हो सका।

स्वामी श्रद्धानन्द का आरम्भिक जीवन स्वयं उनके लिए भी सन्तोष प्रद नहीं रहा था। वे अपने माता-पिता की लाडली सन्तान थे। बनारस के क्वीन्स कॉलेज में उन्हें अध्ययन करने का अवसर मिला। यद्यपि वे बी.ए तक नहीं पहुँचे, किन्तु पूरोपीय दार्शनिकों के अनीश्वरवादी दर्शन तथा अंग्रेजी के रोमांटिक उपन्यासों के अध्ययन ने उनके मस्तिक में एक विचित्र तूफान पैदा कर दिया था। उनके जीवन में उस समय प्रशान्ति तथा पूर्ण विवेक का आविर्भाव हुआ जब वे 1879 में बरेली में महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आए और उनसे अपने मन में उठने वाली शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। यही उनका वास्तविक जन्म समझना चाहिए।

कालान्तर में वकील के व्यवसाय से जुड़े लाला मुंशीराम का कार्य क्षेत्र पंजाब रहा। वे आर्य समाज के नेता, उपदेशक तथा संगठक थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रूप में वे न केवल अपने प्रान्त में अपितु सार्वदेशिक स्तर पर सर्वमान्य नेता की भूमिका में आए। स्वयं के स्वाध्याय के बल पर उन्होंने प्रतिद्वन्द्वी पौराणिक पण्डितों को शास्त्रार्थ समर में पटखनी दी और वैदिक धर्म के गौरव की स्थापना की।

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

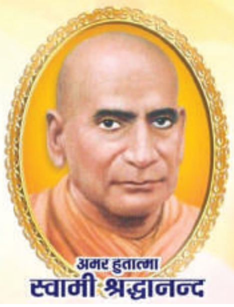

94 वाँ स्वामी श्रद्धानन्द
बलिदान दिवस
शुक्रवार 25 दिसम्बर 2020

यज्ञ : प्रातः 9 से 10 बजे तक
सार्वजनिक सभा : प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक

इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण केवल आर्य संदेश टीवी पर देखें
www.AryaSandeshTV.com

यह समारोह कोरोना के कारण रामलीला मैदान में आयोजित नहीं किया जाएगा।

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के महान शिष्य, विश्व प्रसिद्ध समाजसेवी एवं एम.डी.एच के चेयरमैन

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं पगड़ी रस्म

सरकार द्वारा जारी कोविड-19 बचाव दिशा-निर्देशों के पालन करते हुए सैकड़ों महानुभावों ने दी मौन श्रद्धांजलि

दिल्ली के आर्य विद्यालयों के पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाएंगी
पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के जीवन प्रेरणाएं

15 दिसम्बर; आर्य ऑडिटोरियम, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली। आज किसकी आंखें नम नहीं हैं? किसकी आंखों से आंसू नहीं बह रहे? देश और दुनिया के हर क्षेत्र में मायूसी है, क्या आम और क्या खास, भारत राष्ट्र के महामहिम राष्ट्रपति से लेकर विभिन्न प्रदेशों के महामहिम राज्यपाल, लगभग सभी राजनीतिक दलों के शीर्ष नेता, उद्योगपति, आर्य नेता, अभिनेता, मीडिया जगत, सोशल मीडिया, शिक्षण संस्थान, चिकित्सा जगत, समाज सेवी संगठन, विश्व स्तर पर आर्य संस्थाओं के अधिकारी, कार्यकर्त्ता और सदस्यगण सभी को गहरा आघात लगा है। 3-दिसंबर 2020 की सुबह मानवसेवा का महान सूर्य पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जैसे ही अस्ताचल की ओर गया, वैसे ही मानव समाज में अचानक उदासी का अंधेरा पसरने लगा, ईश्वरीय अटल सिद्धांत के सामने नतमस्तक होकर सारे जगत से मानव सेवा के मसीहा के प्रति श्रद्धांजलियों का दौर शुरू हो गया। यह सिलसिला लगातार चलता रहा, चलता ही रहा।

मानव सेवा ईश्वर की सच्ची इबादत

महाशय जी का जीवन विशाल और विराट था, उनका विस्तार देश-प्रदेश की दीवारों को तोड़कर विश्व समुदाय तक फैला था, वे संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानते थे, अपने और पराए में उन्होंने कभी

- *शेष पृष्ठ 4-5 पर*

वेद-स्वाध्याय

मुझे बचाओ

त्वावतो हीन्द्र क्रत्वे अस्मि त्वावतोऽ वितुः शूर रातौ।
विश्वेदहानि तविषीव उग्रँ ओकः कृणुष्व हरिवो न मर्धीः।। –ऋ 7/25/4
ऋषिः–**वसिष्ठः**।। देवता–**इन्द्रः**।। छन्दः–**पङ्क्तिः**।।

शब्दार्थ – **इन्द्र** = हे परमेश्वर! मैं **त्वावतः** = तेरे–जैसे[आत्मीय] के **क्रत्वे** = कर्म के लिए **हि** = ही, निःसन्देह **अस्मि** = हूँ, सदा उद्यत हूँ और **शूर** = हे शूर! **त्वावतः** = तेरे–जैसे **अवितुः** = रक्षक के **रातौ** = दान में भी हूँ, परन्तु **तविषीवः** = हे सेनावाले! **उग्र** = हे उग्र! ओजस्विन्! तुम अब **विश्वा इत् अहानि** = सभी दिनों के लिए, हमेशा के लिए मुझमें **ओकः** = अपना घर **कृणुष्व** = कर लो, बना लो **हरिवः** = हे हरियोंवाले! **न मर्धीः** = मुझे मरने न दो।

विनय – जगदीश्वर! तुम मेरे आत्मा के भी आत्मा हो। यह जान लेने पर अब मैं तुम्हारे–जैसे आत्मीय के कर्म के लिए सदा उद्यत रहता हूँ। मैं प्रातः से सायंकाल तक और फिर सायं से प्रातः तक जो कुछ करता हूँ वह सब प्रभो! तुम्हारे लिए करता हूँ। हे शूर ! तुम सब संसार के रक्षक हो। इसलिए तुम्हारे लिए कर्म करता हुआ मैं अब तुम्हारे–जैसे महान् रक्षक के दान में भी हो गया हूँ, तुम्हारी महान् रक्षा में आ गया हूँ। तुमसे मेरा सम्बन्ध स्थापित हो गया है, परन्तु फिर भी यह संसार–संग्राम बड़ा विकट है। पाप की प्रबल शक्तियाँ मुझे समय–समय पर अपना भय दिखलाती हैं, मुझे संत्रस्त करती रहती हैं। उस समय, हे इन्द्र! मैं सब सुध–बुध भूल जाता हूँ, तुम्हारी रक्षा, शक्ति सब भूल जाता हूँ, इसलिए मैं तो चाहता हूँ कि हे इन्द्र! तुम मुझमें अब अपना घर कर लो, सदा के लिए घर कर लो। अपनी दिव्य सेना के साथ, अपनी सब उग्रता और ओजस्विता के साथ मुझमें अपना घर बना लो। हे सेनावाले ! हे उग्र! मुझमें अपना घर बना लो। तभी ये आसुरी शक्तियाँ मुझे भयभीत न कर सकेंगी। नहीं तो मैं इन भयों और आशङ्काओं से ही मरा जा रहा हूँ। हे इन्द्र! मुझे इस मरने से बचाओ, मुझमें अपना स्थिर घर करके मरने से बचाओ। मैं तुमसे और कुछ नहीं चाहता और कुछ आकांक्षा नहीं करता, बस मुझमें अब अपना घर बनाओ। हे हरियोंवाले! तुम अपनी ज्ञान–क्रिया और बलक्रिया के हरियों से इस सब संसार का धारण–पोषण कर रहे हो, तुम मुझे अब इस तरह विनष्ट मत होने दो। मुझमें अपना घर बनाओ और इस तरह मुझे विनष्ट होने से बचाओ।

–: साभार :– वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

देश में बढ़ती आत्महत्याओं का अवलोकन करता लेख

आत्महत्या का यह कैसा कारण?

मेरी मौत के लिए कोई जिम्मेदार नहीं है। मैं अपने घर में कई खर्चों की वजह हूं। मैं उन पर बोझ बन गई हूं। मेरी शिक्षा एक बोझ है। मैं पढ़ाई के बिना जिंदा नहीं रह सकती। ये अंतिम शब्द हैं जो अपने शहर की टॉपर रही ऐश्वर्या रेड्डी ने सुसाइड नोट में लिखे हैं। हैदराबाद के पास शाद नगर की रहने वाली ऐश्वर्या ने बारहवीं की परीक्षा में 98 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल कर अपना शहर टॉप किया था और वो दिल्ली के प्रतिष्ठित लेडी श्रीराम कॉलेज में गणित में स्नातक कर रहीं थीं। लॉकडाउन के दौरान उन्हें वापस अपने घर जाना पड़ा जहां आर्थिक परिस्थितियों की वजह से उनके लिए पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल हो गया। आए दिन आप ऐसी खबरें पढ़ते–देखते होंगे कि परिवार के सदस्यों ने सामूहिक रूप से सुइसाइड कर लिया या फिर किसी व्यक्ति ने आत्महत्या करने का प्रयास किया।

अभी हाल ही में वाराणसी शहर के आदमपुर इलाके के नचनी कुआं मोहल्ले में कारोबारी चेतनु तुलस्यानन डायल 112 पर फोन कर सूचना दी कि वह परिवार के साथ खुदकुशी करने जा रहे हैं। पुलिसकर्मी पलट कर फोन मिलाने लगे तो कॉल रिसीव नहीं हुई। बहुत मुश्किल से खोजते हुई पुलिस घर पहुंची तो उनके पिता रविंद्रनाथ ने दरवाजा खोला। पुलिस के पूछने पर बताया कि घर में सब कुछ ठीक है। चेतन के बारे में पूछने पर रविंद्रनाथ ऊपर गए तो कमरे का दरवाजा नहीं खुला। पुलिस ने दरवाजा तोड़कर देखा तो अंदर एक कमरे में परिवार के साथ मृत पड़े थे। पुलिस के मुताबिक सुइसाइड नोट में कारोबार में घाटे के चलते आर्थिक तंगी बयां करने के साथ सुइसाइड नोट में बेटे–बेटी के हवाले से लिखा है कि 'हमें नींद की दवा खिलाकर सुला देना पापा, इसके बाद गला दबा देना।'

वाराणसी शहर में इससे पहले 30 अक्टूबर को हुकुलगंज इलाके में कर्ज और बीमारी से परेशान किशन गुप्ता ने पत्नी नीलम, बेटी शिखा ओर बेटे उज्जवल के साथ जान दे दी थी। ऐसी एक नहीं देश भर में कई घटना होती रहती हैं। पिछले दिनों राजस्थान की राजधानी जयपुर में एक ही परिवार के 4 सदस्यों ने सामूहिक खुदकुशी कर ली थी। यहाँ भी आत्महत्या की वजह आर्थिक तंगी बताई गयी थी।

अगर देखा जाये तो आत्महत्या का किसी व्यक्ति विशेष से कोई संबंध नहीं है। लेकिन सवाल जरुर है कि आत्महत्या के कारण क्या हैं और ऐसी गंभीर समस्या का समाधान क्या है? असल में कई बार इंसान परिस्थिति को स्वीकार नहीं कर पाता, वह निराश होने लगता है। उसे लगने लगता है कि उसका यहाँ कुछ नहीं है वह मरने या खुद को मारने की इच्छा के बारे में बात करने लगता है। बात–बात में जीवन के प्रति उसका मत निराशाजनक होने लगता है। इसका सबसे बड़ा कारण अवसाद है। आज कल की भागदौड की जिंदगी में इंसान को इंसान से कमियों और खूबियों से तौला जाना इसका प्रमुख कारण हैं। व्यक्ति को उसके इच्छा के अनुरूप चीजें नही मिलती, तब वह डिप्रेशन का शिकार हो जाता है। अगर सही समय पर इसका इलाज ना हुआ तो यह डिप्रेशन इतना बढ़ जाता है कि इसका परिणाम आत्महत्या भी हो सकता है। अवसाद की यह स्थिति आत्महत्या के कारणों में से एक बताई जाती है।

दरअसल अवसादग्रस्त व्यक्ति एक तरह का मानसिक रोगी होता है, जिसका इलाज जरूरी है, लेकिन तमाम तरह के दबावों के चलते इच्छाओं का पीछा करने वाले लोगों को यह पता ही नहीं चलता कि कब वे अवसादग्रस्त हो गये और न ही उनके परिवार को इसकी भनक लगती है। अक्टूबर, 2016 का वाकया है, दिल्ली में प्रेम कुमार सुबह की सैर पर निकले और अलग–अलग मेट्रो स्टेशनों पर गये। एक जगह सुरक्षाकर्मियों ने उनके व्यवहार को भांपा और उन्हें अपनी सुरक्षा में ले लिया। अपराध के नजरिए से जब कुछ संदिग्ध नहीं लगा, तो उन्हें छोड़ भी दिया गया। एक घंटे बाद प्रेम कुमार ने एक मेट्रो ट्रेन के सामने कूदकर अपनी जान दे दी। पुलिस पूछताछ में परिवारीजनों से पता चला कि वे काफी समय से चुप–चुप रह रहे थे। दरअसल प्रेम कुमार अवसादग्रस्त थे, मगर पैसे के अभाव में उनका इलाज नहीं हो पा रहा था।

..... अवसादग्रस्त व्यक्ति एक तरह का मानसिक रोगी होता है, जिसका इलाज जरूरी है, लेकिन तमाम तरह के दबावों के चलते इच्छाओं का पीछा करने वाले लोगों को यह पता ही नहीं चलता कि कब वे अवसादग्रस्त हो गये और न ही उनके परिवार को इसकी भनक लगती है। अक्टूबर, 2016 का वाकया है, दिल्ली में प्रेम कुमार सुबह की सैर पर निकले और अलग–अलग मेट्रो स्टेशनों पर गये। एक जगह सुरक्षाकर्मियों ने उनके व्यवहार को भांपा और उन्हें अपनी सुरक्षा में ले लिया। अपराध के नजरिए से जब कुछ संदिग्ध नहीं लगा, तो उन्हें छोड़ भी दिया गया। एक घंटे बाद प्रेम कुमार ने एक मेट्रो ट्रेन के सामने कूदकर अपनी जान दे दी। पुलिस पूछताछ में परिवारीजनों से पता चला कि वे काफी समय से चुप–चुप रह रहे थे। दरअसल प्रेम कुमार अवसादग्रस्त थे, मगर पैसे के अभाव में उनका इलाज नहीं हो पा रहा था।....

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के वर्षवार प्रतिवेदनों का अध्ययन करने से पता चलता है कि वर्ष 2001 से 2015 के बीच भारत में कुल 18.41 लाख लोगों ने आत्महत्या की। इनमें से 3.85 लाख लोगों (लगभग 21%) ने विभिन्न बीमारियों के कारण आत्महत्या की। इसका मतलब है कि भारत में हर एक घंटे 4 लोग बीमारी से तंग आकार आत्महत्या कर लेते हैं।

किसी को लगता है कि उसके होने, न होने से किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। कई बार व्यक्ति जब लंबे समय से तनाव से गुजर रहा होता है, तो वह कई बार खुदकुशी जैसे गलत कदम उठाने की सोचता है। जब हर ओर उसे नाउम्मीदी दिखती है तो वह ऐसा कदम उठा लेता है। लेकिन उसका कोई अपना, दोस्त, सहकर्मी वगैरह उसपर ध्यान दे तो उसे ऐसा करने से रोका जा सकता है। दूसरा ओवरथिंकिंग भी बड़ा कारण है। जरूरत से ज्यादा सोचना हमें अवसाद में धकेल सकता है। कई चीजें हमारे हाथ में नहीं होती, उसे समय पर छोड़ देना बेहतर है। हमने अपने हिस्से की मेहनत की, कोशिश की, बस इसे पूरा करें और संतुष्टि बहुत जरूरी है।

किसी व्यक्ति को अवसाद की स्थिति से बाहर निकालने में उसके आसपास रह रहे लोगों, उसके रिश्तेदार, दोस्त, सहकर्मी आदि की भूमिका अहम होती है। इसके जो शुरुआती लक्षण बताए, उनमें से अगर कुछ भी दिख रहा हो तो आप उस व्यक्ति के पास जाएं। उससे बातें करें और उसका मन हल्का करने की कोशिश करें।

हालाँकि आत्महत्या अपने आप में एक कठिन विषय है, हमारे लिए यही बेहतर होगा कि शांत रहकर उसकी बात सुनें। जो लोग आत्महत्या करने के बारे में सोचते हैं उन्हें जवाब या समाधान नहीं चाहिए। वे अपने भय और चिंताएं व्यक्त करने के लिए एक सुरक्षित स्थान चाहते हैं, जहां उनकी बात सुनी जाए। हमें केवल उन तथ्यों को ही नहीं सुनना है जो वह व्यक्ति बता रहा है, बल्कि उनके पीछे छिपी भावनाओं को भी समझना है। उसे आश्वस्त करना है कि सब कुछ सही है ऐसे करके आप किसी का भी जीवन बचा सकते हैं उसे समझाए जिंदगी रोशनी है, तो मौत का अंधेरा आज नहीं तो कल उसके साथ सब कुछ सही होगा !! – ***सम्पादक***

94वें बलिदान दिवस पर विशेष स्मरण

आर्य समाज की आन, बान और शान के प्रतीक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी

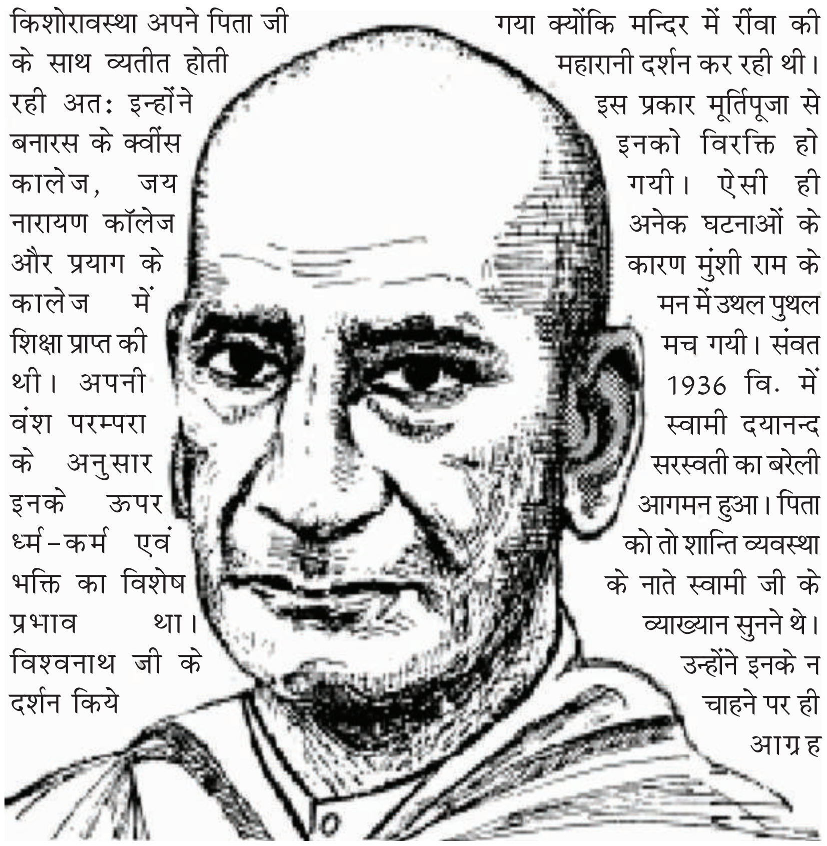

आर्यसमाज के महान संन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य शिष्य महान, क्रान्तिकारी, शिक्षाविद, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज भारत के महान राष्ट्रभक्त संन्यासियों में अग्रणी थे, उन्होंने अपना सारा जीवन स्वाधीनता, स्वराज्य, शिक्षा तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया था। वीरता-धीरता, राष्ट्रभक्ति, ईश्वरभक्ति, मानव सेवा, तप, त्याग, बलिदान और सदभाव इत्यादि सदगुणों की प्रेरणाओं के प्रकाश पुंज स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म २ फरवरी सन् 1856 (फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी, विक्रम संवत् 1913) को पंजाब प्रान्त के जालन्धर जिले के तलवान ग्राम में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके बचपन का नाम बृहस्पति और मुंशीराम था। लहौर और जालंधर उनके मुख्य कार्यस्थल रहे। एक बार आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी वैदिक-धर्म के प्रचारार्थ बरेली पहुंचे। पुलिस अधिकारी नानकचन्द अपने पुत्र मुंशीराम को साथ लेकर स्वामी दयानन्द का प्रवचन सुनने पहुँचे। युवावस्था तक मुंशीराम ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते थे। लेकिन स्वामी दयानन्द जी के तर्कों और आशीर्वाद ने मुंशीराम को दृढ़ ईश्वर विश्वासी तथा वैदिक धर्म का अनन्य भक्त बना दिया।

मुंशीराम जी की बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था अपने पिता जी के साथ व्यतीत होती रही अत: इन्होंने बनारस के क्वींस कालेज, जय नारायण कॉलेज और प्रयाग के कालेज में शिक्षा प्राप्त की थी। अपनी वंश परम्परा के अनुसार इनके ऊपर धर्म-कर्म एवं भक्ति का विशेष प्रभाव था। विश्वनाथ जी के दर्शन किये बिना ये जलपान तक नही करते थे। बांदा में ये नियमित रामचरितमानस का पाठ सुनते थे और प्रत्येक रविवार को एक पैर पर खड़े होकर सौ बार हनुमान चालीसा का पाठ करते थे। एक दिन उनके किशोर हृदय को ऐसी ठेस लगी कि इनकी समस्त रुढ़िवादी धार्मिक कट्टरता तिरोहित हो गयी। हुआ यह कि काशी के विश्वनाथ के दर्शनार्थ गये तो उन्हें बाहर ही रोक दिया गया क्योंकि मन्दिर में रींवा की महारानी दर्शन कर रही थी। इस प्रकार मूर्तिपूजा से इनको विरक्ति हो गयी। ऐसी ही अनेक घटनाओं के कारण मुंशी राम के मन में उथल पुथल मच गयी। संवत 1936 वि. में स्वामी दयानन्द सरस्वती का बरेली आगमन हुआ। पिता को तो शान्ति व्यवस्था के नाते स्वामी जी के व्याख्यान सुनने थे। उन्होंने इनके न चाहने पर ही आग्रहपूर्वक मुंशी राम जी को भी स्वामी जी के सत्संग में सम्मीलित होने की प्रेरणा दी। आदित्यमूर्ति महर्षि दयानन्द के महान व्यक्तित्व के दर्शन कर तथा सभा में पादरी स्काट एवं अन्य यूरोपियनो को बैठा देखकर इनके मन में श्रद्धा का स्रोत प्रस्फुटित हो उठा।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रेरक सेवा कार्य

स्वामी श्रद्धानन्द जी का राजनैतिक जीवन रोलेट एक्ट का विरोध करते हुए एक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में प्रारम्भ हुआ। अच्छी-खासी वकालत की कमाई छोड़कर स्वामीजी ने "दैनिक विजय" नामक समाचार-पत्र में "छाती पर पिस्तौल" नामक क्रान्तिकारी लेख लिखे। स्वामीजी के कार्यों से स्वयं महात्मा गांधी प्रभावित थे। जालियांवाला बाग हत्याकाण्ड तथा रोलेट एक्ट का विरोध वे हिंसा से करने में कोई बुराई नहीं समझते थे। स्वामी जी इतने निर्भीक थे कि जनसभा करते समय अंग्रेजी फौज व अधिकारियों को वे ऐसा साहसपूर्ण जवाब देते थे कि अंग्रेज भी उनसे डरा करते थे। 1922 में गुरु का बाग सत्याग्रह के समय उन्होंने अमृतसर में एक प्रभावशाली भाषण दिया। हिन्दू महासभा उनके विचारों को सुनकर उन्हें प्रभावशाली पद देना चाहती थी, किन्तु उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया।

स्वामीजी ने 13 अप्रैल 1917 को संन्यास ग्रहण किया, तो वे स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। आर्यसमाज के सिद्धान्तों का समर्थक होने के कारण उन्होंने आर्यसमाज का बड़ी तेजी से प्रचार-प्रसार किया। वे नरम दल के समर्थक होते हुए भी ब्रिटिश उदारता के समर्थक नहीं थे। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार, आर्ष पाठ विधि का उत्थान और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की पुनर्स्थापना हेतु उन्होंने हरिद्वार में गंगा किनारे गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर एक कीर्तिमान स्थापित किया।

स्वाधीनता आंदोलन में अभूतपूर्व योगदान

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दलितों की भलाई के कार्य को निडर होकर आगे बढ़ाया, साथ ही कांग्रेस के स्वाधीनता आंदोलन का बढ़-चढ़कर नेतृत्व भी किया। कांग्रेस में उन्होंने 1919 से लेकर 1922 तक सक्रिय रूप से महत्त्वपूर्ण भागीदारी की। 1922 में अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया, लेकिन उनकी गिरफ्तारी कांग्रेस के नेता होने की वजह से नहीं हुई थी, बल्कि वे सिक्खों के धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए सत्याग्रह करते हुए बंदी बनाये गए थे। स्वामी श्रद्धानन्द कांग्रेस से अलग होने के बाद भी स्वतंत्रता के लिए कार्य लगातार करते रहे। हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए स्वामी जी ने जितने कार्य किए, उस वक्त शायद ही किसी ने अपनी जान जोखिम में डालकर किए हों। वे ऐसे महान् युगप्रणेता महापुरुष थे, जिन्होंने समाज के हर वर्ग में जनचेतना जगाने का कार्य किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी सत्य के पालन पर बहुत जोर देते थे। उन्होंने लिखा है- प्यारे भाइयो! आओ, दोनों समय नित्य प्रति संध्या करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करें और उसकी सहायता से इस योग्य बनने का यत्न करें कि हमारे मन, वाणी और कर्म सब सत्य ही हों। सर्वदा सत्य का चिंतन करने वाले, देश धर्म पर पूरी श्रद्धा रखने वाले,महान बलिदानी स्वामी जी को एक उददण्ड मतांध व्यक्ति ने 23 दिसम्बर, 1926 को गोली मार दी। और इस तरह वेद धर्म, देश, संस्कृति, शिक्षा और दलितों का उत्थान करने वाले महान संन्यासी महापुरुष सदा के लिए अमर हो गए। ऐसे निर्भीक महान यौद्धा स्वामी श्रद्धानन्द जी को उनके 94वें बलिदान दिवस पर शत-शत नमन।

- ***आचार्य अनिल शास्त्री***

प्रेरक प्रसंग

टांगा किसलिए लाए?

आर्यसमाज नयाबाँस, देहली-6 की आधारशिला पूज्य भाई परमानन्दजी ने रक्खी। भाईजी के प्रति इस समाज के सदस्यों को बहुत श्रद्धा थी। एक बार इसी समाज के किसी कार्यक्रम पर देवतास्वरूप भाई परमानन्दजी आमन्त्रित थे। श्री पन्नालाल आर्य उन्हें स्टेशन पर लेने के लिए गये। नयाबाँस का आर्य समाज मन्दिर स्टेशन के समीप ही तो है।

श्री पन्नालालजी भाईजी के लिए टाँगा ले-आये। टाँगेवाले उन दिनों एक सवार का एक आना (आज के छह पैसे) लिया करते थे। आर्यसमाज की आर्थिक स्थिति से भाईजी परिचित ही थे। भाईजी को जब टाँगे पर बैठने के लिए कहा गया तो आप बोले, 'पन्नालाल, टाँगा क्यों कर लिया? पास ही तो समाज-मन्दिर है। आर्यसमाजों में धन कहाँ हैं, कितने कार्य समाज ने हाथ में ले-रक्खे हैं।

गुरुकुल, पाठशाला, गोशाला व अनाथालय, शुद्धि और पीड़ितों की सहायता...न जाने किन-किन कार्यो के लिए आर्यसमाजों को धन जुटाना पड़ता है।

श्री पन्नालालजी ने उत्तर में कुछ कहा, परन्तु भाईजी का यही कहना था कि यूँ ही समाज के धन का व्यय नहीं होना चाहिए। मैं तो पैदल ही पहुँच जाता।

ऐसा सोचते थे आर्यसमाज के निर्माता। आज अनेक जन-आर्यसमाजी लोग, आर्यसमाजों में घुसकर समाज की धन-सम्पत्ति को हड़पने में जुटे हैं। सारे देश का सामाजिक जीवन दूषित हो चुका है। आर्य लोग अपनी मर्यादाओं को न भूलें तो मानवजाति व देश का बड़ा हित होगा।

यह घटना श्री पन्नालालजी ने 1975 ई. में मुझे सुनाई थी। भाईजी की सहारनपुर की भी एक ऐसी ही घटना सुनाई। तब भाईजी केन्द्रीय विधानसभा (संसद्) के सदस्य थे। वहाँ भी पन्नालालजी आर्य टाँगा लेकर आये। भाईजी ने टाँगा देखते ही कहा, ''पन्नालाल! मेरी दिल्ली में कही हुई बात भूल गये क्या?''

- *प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु*

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : **पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में
सिक्के वाले मात्र 500/-रु. सैंकड़ा
बिना सिक्के मात्र 300/-रु. सैंकड़ा
प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

युवा भज
आप सबको
सन्दीप भास्कर
एन.सी.आर. की
अधिकारी महानु
प्रचार सप्ताहों, भ
आमन्त्रित करें अ
गुणगान, देश भ
भजनोपदेश
मोबाइल नं. पर
श्री स
मो.

महाशय जी की पगड़ी रस्म पर उनके प्रति श्रद्धांजलि तथा महाशय जी के चिकित्सकों का धन्यवाद-आभार

श्रद्धांजलि देते डॉ. सत्यपाल सिंह जी, स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी सरस्वती एवं चिकित्सकों का आभार व्यक्त करते महाशय श्री राजीव जी

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की पारिवारिक, व्यापारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों के निवर्हन के लिए महाशय श्री राजीव गुलाटी जी एवं श्रीमती ज्योति गुलाटी जी को आशीर्वाद देते स्वामी प्रणवानन्द, श्री धर्मपाल आर्य, डॉ. सत्यपाल सिंह, स्वामी सम्पूर्णानन्द, स्वामी सुमेधानन्द, स्वामी डॉ. देवव्रत एवं अन्य महानुभाव। सभी उपस्थित महानुभावों एवं देश-विदेश से लाइव जुड़े उद्योगपतियों, राजनेताओं, समाजसेवियों, आर्यसमाज के अधिकारियों का धन्यवाद करते महाशय राजीव गुलाटी जी व श्रीमती ज्योति गुलाटी।

आर्य ऑडिटोरियम, ईस्ट आफ कैलाश में पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को मौन श्रद्धांजलि देने के लिए उपस्थित जनसमूह

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को ऑनलाइन एवं विभिन्न संचार साधनों से दी गई श्रद्धांजलि

डॉ. अशोक चौहान, संस्थापक, अध्यक्ष एमिटी शिक्षा संस्थान

आज हम सब महाशय जी के प्रेरणा दिवस पर एकत्रित हुए हैं और पूरे विश्व से हजारों लोग इस अवसर पर जुड़े हुए हैं। महाशय जी सबके दिलों में बसे हुए हैं। श्री विनय आर्य जी और धर्मपाल आर्य जी ने यह निश्चय किया है कि महाशय जी के अधूरे सपनों को पूरा करेंगे। महाशय जी जब मोक्ष में पहुंचे तो ईश्वर ने कहा कि आपके लिए सुन्दर व्यवस्था तैयार की है। तो महाशय जी ने कहा कि मुझे तो पुनः पृथ्वी पर जाना है, आर्यसमाज की सेवा करनी है मानवता की सेवा करनी है, दुनिया की सेवा करनी है। इस तरह का उनका व्यक्तित्व था। जो संस्कार महाशय जी ने राजीव जी को, ज्योति जी को, हिरणया और वान्या जी को दिए उन्हें मैंने स्वयं देखा है। हिरणया ने हमारे यहां ग्रेजुऐशन की पढ़ाई पूरी की, हम हर साल महाशय जी का प्रेरणा दिवस मनाएंगे, एमिटी शिक्षण संस्थान ने यह निश्चय किया है कि हर वर्ष महाशय जी के नाम पर एक मैडल ऐसे प्रतिभावान विद्यार्थी को दिया जाएगा, जिसमें महाशय जी के सारे गुण विद्यमान होंगे। अभी 29 तारीक को हमारा दीक्षांत समारोह है, जिसमें हम महाशय जी के नाम पर पहला मैडल प्रदान करेंगे, महाशय जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हुं। ओ३म् शांति।

आचार्य वागीश जी, वैदिक विद्वान

समाज, राष्ट्र, और आर्य समाज तथा मानवता की महान विभूति पद्म भूषण महाशय धर्मपाल जी ने लंबा और गरिमापूर्ण जीवन जीया, गरिमापूर्ण जीवन जीना बड़े सौभाग्य की बात होती है इसके साथ लंबा जीवन, गरिमापूर्ण जीवन और सफल जीवन होना बड़ी दुर्लभ बात है। सफल भी बहुत से लोग हो जाते हैं, धनवान भी हो जाते हैं, पद-प्रतिष्ठा को भी प्राप्त करते हैं, लेकिन सुफल होना गौरव की बात है। कोई वृक्ष फलदार हो सकता है लेकिन ये देखने की बात है कि उसके फल मीठे हैं, स्वास्थ्य देने वाले हैं, या जहरीले हैं। महाशय जी ने एक सफल जीवन जीया, एक सुफल जीवन जीया और उन्होंने अपने जीवन को सार्थक किया। महाशय जी ने देश के लिए, समाज के लिए और मनुष्यता के लिए जो कुछ किया उसे आने वाली पीढ़िया भी सदा याद रखेंगी और प्रेरणा लेती रहेंगी। उन्होंने शून्य से शिखर की यात्रा की और अपने धन का सदुपयोग किया। आज उनके चले जाने का जो परिवार को संताप है, उनका एक पूरा समाज परिवार है, जिसके करोड़ो लोग आज उनके जाने की कमी को महसूस कर रहे हैं। वे एक भामाशाह थे। उन्होंने अपने परिवार और सामाजिक परिवार पर सदा प्रेम की वर्षा की। अच्छा व्यक्ति तीन रूपों में हमेशा जीवित रहता है, एक शुभकर्मों की सुगंधके रूप में, एक अपने आत्मतत्व के रूप में ईश्वर की शरण में, और सबके दिलों में, वे हमारे दिलों में जिंदा है, हमेशा जिंदा रहेंगे। वे श्री राजीव गुलाटी जी के कर्मों में जीवित रहेंगे। मैं उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

श्रीमती किरण चोपड़ा, निदेशक, पंजाब केसरी

अगर हम समझें कि समर्पण, सहयोग, संस्कार, योग इन सबकी परिभाषा क्या है तो वे महाशय जी थे। उनका जाना बहुत बड़ा शून्य है, उसे कभी भी भरा नहीं जा सकता।

डॉ. वेदपाल जी प्रधान, परोपकारिणी सभा

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अजमेर के संरक्षक पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के परलोक प्रयाण के कारण से सभा जहां उनकी गरिमामयी उपस्थिति से वंचित हुई है। ऐसे सभा के संरक्षक के प्रति परोपकारिणी सभा के न्यासी गणों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

सुरेंद्र कुमार आर्य, चेयरमैन जे.बी.एम ग्रुप

देवियों और सज्जनों श्रद्धेय महाशय जी के जाने से हमने एक सर्वप्रिय, सर्वमान्य और महान सरपरस्त को खो दिया है। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति देगा ही इसमें कोई संदेह नहीं है। मुझे भी उनके जीवन की अनेक विशेषताओं को निकटता से देखने और लगातार उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। आर्य समाज के अंतर्राष्ट्रीय केंद्र हेतु भूमि चुनाव के लिए यात्रा के समय कभी उनकी दूरदर्शी और विशाल सोच वाले गंभीर नेतृत्व के दर्शन होते और कभी वर्तमान में जीने वाले विनोदी और मस्त स्वभाव के दर्शन होते। कभी वे पक्के और स्पष्ट व्यवसायी के रूप में बाते करते, कभी भोजन, फोटोग्राफी यात्रा का आनंद उठाते हुए एक सरल अंहकार शून्य बालक बन जाते। वास्तव में इतनी विविधता से पूर्ण महाशय जी के चले जाने से एक युग ही समाप्त हो गया है। अब हमारा कर्त्तव्य है कि महाशय जी के द्वारा प्रारंभ किए गए असख्य सेवा कार्यो को उनकी भावना अनुसार लगातार चलाते रहें। साथ ही नए प्रकल्पों को तीव्र गति से पूर्णता की ओर ले जाकर उनको सच्ची श्रद्धांजलि दे। ओ३म् शांति शांति।

- शेष पृष्ठ 6 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

भेद नहीं किया, वे तो सबके दु:ख को अपना दु:ख मानकर उसे दूर करने का सतत् प्रयास करते थे, किसी की आंख से बेबसी, लाचारी, मजबूरी का आंसू बहे तो उसे अपनी कोमल अंगुलियों से पोंछकर उसके चेहरे पर मुस्कान बिखेर देते थे, वे मानव सेवा के लिए जीते थे, मानव सेवा को ही सबसे बड़ा धर्म, पूजा और ईश्वर की सच्ची इबादत कहते थे। ऐसे महापुरुष का अचानक चले जाना मानव समाज की अपूर्णीय क्षति है, जिसे सब महसूस कर रहे हैं और चिरकाल तक करते रहेंगे।

विश्व भर में आयोजित हुई श्रद्धांजलि सभाएं

महाशय जी की श्रद्धांजलि सभाओं के आयोजन भारत के कोने-कोने में और विदेशों में विभिन्न संस्थाओं द्वारा किए गए। सभी स्थानों पर उनकी पुण्यात्मा के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। विशेष रूप से 13 दिसम्बर 2020, एस.डी पब्लिक स्कूल कीर्तिनगर में महाशय जी के सुपुत्र श्री राजीव गुलाटी जी, पुत्रवधु श्रीमती ज्योति गुलाटी जी, महाशय जी की सुपुत्रियां दामाद और उनके बच्चों सहित आर्य समाज के अनेक अधिकारियों, उनसे आशीर्वाद प्राप्त अनेक संस्थाओं के अधिकारियों, बच्चों, बुजुर्गों, युवाओं की उपस्थिति में संपन्न हुई।

शांति यज्ञ एवं पगड़ी रस्म में देश-विदेश की सहभागिता

15 दिसम्बर 2020 को आर्य आडिटोरियम ईस्ट ऑफ कैलास में सायं 3 बजे से 5 बजे तक अत्यंत भावपूर्ण वातावरण में शांतियज्ञ एवं पगडी रस्म कार्यक्रम संपन्न हुआ। आज की शाम बहुत ही उदास महसूस हुई। महाशय जी के सुपुत्र श्री राजीव गुलाटी जी और पूरे एम.डी.एच परिवार सहित उपस्थित जनसमुदाय की आंखें छलक गई, महाशय जी की याद में उपस्थित हर मनुष्य की आंखों से अश्रुधारा बही, बहती रही। शांति यज्ञ से कार्यक्रम शुरू हुआ, यज्ञ के ब्रह्मा श्री ऋषिपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में शांति देवी आर्य कन्या गुरुकुल की कन्याओं ने मंत्रपाठ किया, श्री राजीव गुलाटी जी, श्रीमती ज्योति गुलाटी जी, सुपुत्री वान्या गुलाटी जी और हिरण्या गुलाटी जी ने यज्ञ में आहुतियां देकर महाशय जी की पवित्र पुण्यात्मा की शांति-सदगति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की, जिसमें उपस्थित जनसमुदाय सहभागी बना।

भजन भाव में विभोर हुआ जन-जन का तन-मन

महाशय जी के प्रति कवि की भाव तरंग, उसमें से प्रकट हो रही वाइब्रेसन, एक अजीब सा स्पंदन सबके तन-मन में सिरहन सी फैल गई, कोमल मन द्रवित हो उठे, महाशय जी के शुभकर्मो की सुगंध से आडिटोरियम का हर कोना और आर्य संदेश टी.वी चैनल पर लाइव जुड़े हजारों लोगों का मन महक उठा, उनकी याद में केवल आंखें नहीं लोगों के रोम रोम शोकाकुल हो उठे, भजनों के भाव संगीत पर थिरकने वाला महान महाशय, अनायास मौज मस्ती में झूमने वाला अनोखा इंसान, विलक्षण प्रतिभा संपन्न होकर सरल सहज, सादगी का स्वामी अपनी जिंदादिली के लिए मशहूर महाशय जी के जीवन पर लिखी भजन की पंक्तियां अत्यंत मार्मिक थी, उनका फूल सा जीवन, ऐसा फूल जिसकी सारी पंखुडियां-खिली-खिली, सेवा-साधना के रंगों की विविधता के साथ, भीनी-भीनी सुगंध बिखेरती रही, वे जहां भी गए, जहां भी बैठे, जहां रहे खुशबू बांटते रहे, आज कवि आकाश से पूछता रह गया कि तेरा धैर्य क्यों टूट गया, गगन के सीने में छेद कैसे हो गया, जगत को जगमग करने वाला सितारा कैसे टूट गया? आज मानव जाति का दिल क्यों टूट गया, एक फूल खुशबू बिखेर कर बिखर गया। अमृत कलश छलक गया। इस भजन भाव गीत से सारा वातावरण भावविभोर हो गया, स्वयं महाशय जी के सुपुत्र श्री राजीव गुलाटी जी सहित एम.डी.एच परिवार, आर्य समाज परिवार की आंखें नम हो गई।

जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दा लोग क्या खाक जिया करते हैं।

आज महाशय जी की महानता के सामने उनके नाम के साथ लगाया जाने वाला हर अलंकार छोटा लग रहा था। महाशय जी की कामयाबी को, सफलताओं को, प्रसिद्धी को कागज पर लिखना, वाणी से कह पाना असंभव था, इसलिए एक डाक्यूमेंट्री फिल्माई गई, जिसमें बताया गया कि एक सपना, महान व्यक्तित्व किस तरह अपने जीवन को साधना के पथ पर आगे बढ़ाता है, एम.डी.एच. मशालों का स्वाद-जायका संसार भर में पहुंचाता है। महाशय जी की विश्व कल्याण की सोच और उसका क्रियान्वयन इस लघु डाक्यूमेंट्री में दर्शाया गया। महाशय जी का साक्षात्कार जिसमें वे स्वयं बता रहे हैं कि माता पिता के आशीर्वाद से और संसार के प्यार से इंसान अमर हो जाता है, जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दा लोग क्या खाक जिया करते हैं। महाशय जी प्रेरक पांच थपकियां भी लोगों को लंबे समय तक याद आएंगी। इस डाक्यूमेंट्री को देखकर उपस्थित लोग काफी हद तक असहज हो उठे थे।

देश-विदेश में बसे एम.डी.एच परिवार की अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

एम.डी.एचय परिवार के मुखिया पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को पूरा एम.डी.एच परिवार हर रूप में प्रेरणा का स्रोत मानता था, उनकी शिक्षाओं को, आशीर्वादों को और प्रेम-प्यार-प्रसन्नता, उदारता, परोपकारी स्वभाव को अपने दिल में बसाकर रखता था। आज एम.डी.एच के सभी एक्सपोर्टरस ने जब महाशय जी को श्रद्धांजलि दी तो उपस्थित जन समुदाय भाव विवहल हो उठा......।

पारिवारिक, व्यापारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों के रूप में आशीर्वाद के साथ पहनाई पगड़ी

पगड़ी रस्म के अवसर पर स्वामी देवव्रत जी, स्वामी प्रणावनंद जी, आचार्य राजेंद्र जी, सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी और विश्व की समस्त आर्यसमाजों की ओर से आए हुए शोक प्रस्तावों का वर्णन करते हुए श्री राजीव गुलाटी जी एवं श्रीमती ज्योती गुलाटी जी को जब पगड़ी रस्म के लिए आमंत्रित किया तो सारा वातावरण भावुक हो उठा। वास्तव में ये भावुक पल थे ही क्योंकि आज एक महान पिता की पारिवारिक, सामाजिक, व्यापारिक और समस्त जिम्मेदारियों का भार पगड़ी के रूप में श्री राजीव जी को सौंपा जा रहा था, वैदिक मंत्र उच्चार के बीच आचार्य श्री ऋषिपाल शास्त्री जी ने महाशय जी के सुपुत्र श्री राजीव जी को पगड़ी पहनाई और इस अवसर पर जिस तरह की पगड़ी की पहचान महाशय जी की थी। वैसी लाल रंग की अलग से एक पगड़ी भी राजीव जी को पहनाई गई। इसके उपरांत उपस्थित समस्त संन्यासीवृद्धों के साथ समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने सामाजिक जिम्मेदारियों की पगड़ी भी राजीव जी को पहनाई गई।

कोरोना के चलते-समय सही रहा तो 27 मार्च को मनाएंगे महाशय जी का जन्मोत्सव - राजीव गुलाटी

इस प्रार्थना सभा में आए हुए सभी महानुभाव। 3 दिसंबर को एक युग का अन्त हो गया था। माहशय जी परमपिता परमात्मा की इच्छा अनुसार इस संसार को छोड़ गए, वे अपने पीछे एक ऐसी विरासत को छोड गए, जिसमें हम सबके लिए पूरी जगह है। उनकी स्वछंद मुस्कान और हंसी सबके उपर अपनी छाप छोड़ती थी और सबको अपना बना लेती थी। वे कहते थे कि "हम तो अकेले चले थे जानिबे मंजिल मगर, लोग मिलते गए, कारवां बनता गया। आज वो मुखिया हमको अकेले छोड़कर चले गए, उन्होंने जो भी कार्य किए सदा परमपिता परमात्मा और अपने माता-पिता को आगे मानकर किए। इसीलिए परमपिता परमात्मा ने जो भी उनके रचनात्मक कार्य थे, सदा समाज सेवा के लिए थे उन्हें पूर्ण किया। व्यापारिक रूप से भी जो उनकी इच्छाएं थी, उनकी सारी परमात्मा ने पूरी की पर इसके बावजूद जो उनको ऐश्वर्य इज्जत, सम्मान, यश प्राप्त हुआ, उसको उन्होंने कभी अपना नहीं माना, वे सदा समाज के लिए कार्य करते रहे। चाहे वो शिक्षा का क्षेत्र हो चाहे समाज का क्षेत्र हो या चाहे चिकित्सा का क्षेत्र हो या विशेषरूप से आर्यसमाज का क्षेत्र हो उन्होंने कभी किसी को निराश नहीं किया, मेरी नजर में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो कभी उनसे नाराज हुआ हो, उन्होंने सभी को सदा प्यार ही बांटा और आशीर्वाद ही दिया, उन्होंने हमेशा अपने माता पिता को याद किया और अपने परिवार की प्रतिष्ठा को आगे बढ़ाया, ऐसा अनुपम उदाहरणीय और अनुकरणीय जीवन जिसमें धर्म, सरलता, अनुशासन सदा हमें प्रेरणा देते रहेंगे। हमारी माता जी के स्वर्गवास के बाद भी उन्होंने अपने परिवार को संभाले रखा और पिता होने के नाते सभी चीजों को संभाले रखा, उन्होंने अपने नम्र और सरल स्वभाव के अनुरूप कभी हमें माता जी की कमी खलने नहीं दी। माता और पिता दोनों का किरदार बखूबी निभाया। जो आता है वह जाता भी है, यही आखिरी सत्य है। समय के साथ ही सब ठीक होता है परन्तु यह आघात बहुत समय लेगा। हम सभी को उनके जीवन से सीखते हुए, प्रेरणा लेते हुए अपने आपको उबारना है और सेवा के क्षेत्र में आगे ले जाना है, उनकी इच्छा के अनुसार हमें ऐसे कार्य करने हैं जो ये कम्पनी 500 वर्षो तक आगे बढ़े। उनके द्वारा शुरू किए गए कार्यो को और बढ़ाना है, जैसे वो कहते थे कि मुझे कभी मरना ही नहीं है, इस बात को सच करके दिखाना है। शायद इसलिए उन्होंने हमें तैयार किया था, हम सब मिलकर आगें बढ़ेंगे और उनको निराश नहीं करेंगे। आप सब इस प्रार्थना सभा में शामिल हुए, कोरोना काल बहुत बड़ा दुर्भाग्य का समय है, इसमें बहुत सारे प्रियजन आ नहीं पाए, इस बात का मुझे खेद है। लेकिन जैसे आगे समय सही होगा हमारे यहां पुण्यतिथि को नहीं मनाते हम 27 मार्च को पूरी भव्यता के साथ उनका जन्मदिन मनाएंगे और हम फिर एक बार एकत्रित होंगे, मैं आप सभी का फिर धन्यवाद करते हुए महाशय जी को नमन करता हूं।

प्रार्थना सभा के समापन अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री जो कि इस कार्यक्रम के संयोजक थे उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय से पूछा कि बंधुओं क्या महाशय जी के आशीर्वाद के बिना यह कार्यक्रम अधूरा नहीं होगा, लेकिन क्या वो आज आशीर्वाद देने के लिए हम सबके बीच उपस्थित है? मैं समझता हूं कि हां हैं और आज ही नहीं हमेशा रहेंगे। मैं समझता हूं कि शब्द भी मेरे नहीं हो सकते, वाणी भी मेरी नहीं है, यह आशीर्वाद तो उसी महान तेजस्वी, तपस्वी, दिव्यात्मा का है। आप सब और हम मिलकर एक संकल्प अपने मन में करें कि इस सदी के महामानव के साथ में हमें रहने का कितना अवसर मिला, कितना बड़ा सान्निध्य मिला, हर व्यक्ति यह सोचता है कि महाशय जी से मेरा सबसे ज्यादा घनिष्ठ सम्बन्ध था, जिससे वो मिले या न मिले सबके ऊपर उनका आशीर्वाद ही था, जिसे हम सदैव निरंतर महसूस करते रहेंगे। आदरणीय भाई श्री राजीव जी ने जो आज संकल्प लिया है, उस संकल्प को हम सबने मिलकर के पूरा करना है और उस संकल्प को पूरा करने के लिए महाशय जी का आशीर्वाद चाहिए ही चाहिए, वह आशीर्वाद ही हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देकर लगातार आगे बढ़ाता ही रहेगा।

......मौन.....

..... हार्दिक श्रद्धांजलि.....

पृष्ठ 4 का शेष

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को ऑनलाइन एवं विभिन्न संचार साधनों से दी गई श्रद्धांजलि

The passing of Mahashay Dharampal Gulati Ji, the grand old man of Indian enterpreneurship is a sad day for the country. He added spices to our lives & was a part of every indian household. I offer my heartfelt condolence to his family & admirers. Om Shanti.

– हरदीप सिंह पुरी, केंद्रीय उड्डयन मंत्री, भारत

देश के मसालों की सुगंध को पूरे विश्व में फैलाने वाले, पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित महाशय धर्मपाल गुलाटी जी के निधन से अत्यंत दुख हुआ। अपनी उद्यमिता से स्वदेशी व आत्मनिर्भरता के साथ ही उन्होंने सामाजिक कार्यों का एक आदर्श स्थापित किया। ईश्वर उन्हें मोक्ष प्रदान करें। ओ३म् शांतिः।

– पीयूष गोयल, केंद्रीय रेल मंत्री, भारत

पद्मभूषण से सम्मानित, प्रसिद्ध समाजसेवी व एम.डी.एच के मालिक मसाला किंग 'महाशय धर्मपाल जी' के निधन का दु:खद समाचार प्राप्त हुआ। उद्योग और सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए वह सदैव याद किए जाएंगे। मैं उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। ओ३म् शांतिः!

– त्रिवेन्द सिंह रावत, मुख्यमंत्री, उत्तराखंड

Deeply saddened to know the passing away of Padma Shri Dharampal Gulati Ji, popularly known as MDH Dadaji. He was a shining beacon of India's entrepreneurial journey who turned MDH Spices into an iconic brand. He will always be remembered for his philanthropic work. Om Shanti

– नवीन पटनायक, मुख्यमंत्री, ओडिशा

प्रमुख समाजसेवी, उद्योगपति महाशय धर्मपाल गुलाटी जी के दुखद निधन पर उनको विनम्र श्रद्धांजलि। भगवान उनको अपने चरणों में स्थान दें और परिवार को इस दुख को सहने की शक्ति दे। ओ३म् शान्तिः।

– अजय माकन, राष्ट्रीय महासचिव, कांग्रेस

अपनी लगन और मेहनत के दम पर सफल उद्योगपति बनने का सफर तय करने वाले, महाशय धर्मपाल जी के निधन का दुखद समाचार मिला, उनका पूरा जीवन जन सेवा को समर्पित रहा, महाशय धर्मपाल स्वामी दयानंद के सच्चे अनुयायी थे और उन्होंने हमेशा जीवन में वैदिक सिद्धांतों का पालन किया, उनका जाना एक युग का अंत हो जाना है, उनका जीवन हम सभी को प्रेरणा देता रहेगा। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और परिजनों को यह असीम दुख सहने की शक्ति दे। ओ३म् शांतिः।

– कैप्टन अभिमन्यु, कैबिनेट मंत्री, हरियाणा

महर्षि दयानंद के अनन्य शिष्य पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार तथा आर्यजनों की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ओ३म् शांतिः।

–अशोक खेत्रपाल, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार

नमस्ते! It is a great sadness that we have received in use of the demise of Sh. Mahashay Ji, His daily rigers routine, consistant practice of yoga, acute h conscourse & commitment to whatever he did makes him a role model that all we need to imunite we offer our deepest sympathies to his family & The Arya Samaj in India which was his extented family his beloved kutmb.

– डॉ. रामबिलास, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका और उत्तरी अमेरिका के सभी आर्यजनों की ओर से मैं आदरणीय स्वर्गीय महाशय धर्मपाल जी को कोटि कोटि नमन करता हूं। श्री राजीव गुलाटी जी जिनमें हम आदरणीय महाशय जी का ही स्वरूप देखते हैं और पूरे गुलाटी परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं।

– भुवनेश खोसला, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका

महाशय धर्मपाल जी अपने आपमें एक मिसाल थे। आज वो हमारे बीच में नहीं हैं, ऐसे स्वाध्यायशील व्यक्ति, दानी पुरुष जो हमेशा आर्य समाज को आगे बढ़ाने में तत्पर रहते थे, उस महान आत्मा के प्रति आर्य प्रतिनिधि सभा मॉरीशस की तरफ से श्रद्धा के फूल अर्पित करते है।

– हरिदेव रामधनी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा मॉरीशस

नमस्ते, मैं डॉ. माधव प्रसाद उपाध्याय केन्द्रीय आर्य समाज नेपाल का अध्यक्ष हूं। महर्षि दयानंद सरस्वती का सच्चा अनुयायी, वैदिक धर्म, संस्कृति, संस्कारों का उत्थान करने वाले, जीवन भर कर्म से जुड़े हुए कर्मयोगी, महान दानवीर, धर्मवीर, पुरुषार्थी पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के निधन पर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति मेरी शोक संवेदना है।

– डॉ. माधव प्रसाद उपाध्याय, प्रधान, केंद्रीय आर्य समाज नेपाल

सभी दर्शकों को हमारा वैदिक अभिवादन सादर नमस्ते, गत दिनों हमारे बीच से एक महान व्यक्ति पद्मभूषण श्री महाशय धर्मपाल हम सबसे बिछड गए तो यहां से हृदय के साथ हम अपनी तमाम संस्था आर्य दिवाकर महासभा सूरीनाम की ओर से श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते है।

– इंद्र गंगा बिसन सिंह, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा सूरीनाम

आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया सहित फिजी और न्यूजीलैंड के सभी सभासदों की ओर से आर्य समाज के महानायक, भामाशाह, पदम भूषण सम्मान से विभूषित, महात्मा ,महाशय धर्मपाल जी के देहावसान पर शोक संवेदना व्यक्त करते हैं। आर्य समाज की गतिविधियों को चलाने के लिए महाशय जी एक वट वृक्ष के समान थे, जिनकी छाया में अनेक सेवा प्रकल्प गतिशील थे, उनका जाना एक महान क्षति है,हम सब मिलकर इस क्षति से सम्भलने की कोशिश करें, महाशय जी को शत शत नमन

– योगेश आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा ऑस्ट्रेलिया

Makers of the Arya Samaj : Pt. Guru Dutt ji

MULTAN is one of the historic towns in the Punjab. It is famous as the birthplace of Prahlad. This boy is well known for his devotion to God. He defied even his father, because he asked him to give up faith in God.

The town is very hot in summer. There is a couplet about it which says, "There are four things for which Multan is well known. They are dust, heat, beggars and graveyards." It was in this town that Guru Dutt was born on the 26th of April, 1864.

It is said that one's ancestors and parents have much to do with the forming of one's character. Guru Dutt was very lucky in this respect. One of his ancestors was Raja Jagdishji. He was so devoted to his religion that he sacrificed even his life for it. He and his descen-dants came, therefore, to be known as Sardanas or those who gave their heads for their faith. This word afterwards came to be changed into Sarvana. All the people. All the people who belong to this family are known to this day by that name. It is no wonder that Guru Dutt inherited a love of truth, a willingness to suffer for his religion, and a keen sense of duty.

Guru Dutt's great-grandfather was in the service of the Nawab of Bahawalpur. He was sent by him to the court of Kabul as an ambassador. Diwan Sawan Mal, ruler of Multan, treated the members of this family with great conside-ration. He looked upon them as his best friends. Whenever any ofthem paid a visit to Multan he sent his officers to receive him. Guru Dutt's father was called L. Ram Krishan. All his life he was a teacher. He was one of the pioneers who were responsible for laying the founda-tions of he educational system in the Punjab. He was of medium size, but had a strong, well-built body. He was interested in Urdu and Persian Literature and possessed a good deal of common-sense. His son took after him in many ways.

Guru Dutt's great-grandfather was in the service of the Nawab of Bahawalpur. He was sent by him to the court of Kabul as an ambas-sador. Diwan Sawan Mal, ruler of Multan, treated the members of this family with great conside-ration. He looked upon them as his best friends. Whenever any ofthem paid a visit to Multan he sent his officers to receive him. Guru Dutt's father was called L. Ram Krishan. All his life he was a teacher. He was one of the pioneers who were responsible for laying the founda-tions of he educational system in the Punjab. He was of medium size, but had a strong, well-built body. He was interested in Urdu and Persian Literature and possessed a good deal of common-sense. His son took after him in many ways

L. Ram Krishan was deeply religious by nature. He had great faith in Brahmins and gurus. For many years he was childless. One day he went to his guru and asked him in a piteous tone, "When will God bless me with a son? I do not want to die childless." The guru told him not to despair. "God will be good to you," he said, "and a son will be born to you before long."

L. Ram Krishan had wonderful will power. The year before his death his son asked him to read Sanskrit. He therefore began to study this language. He made remarkable progress in it in a short time. After six months he was able to write to his son in this language. It is said that the letter contained very few mistakes. Such were his powers of application and memory even in old age.

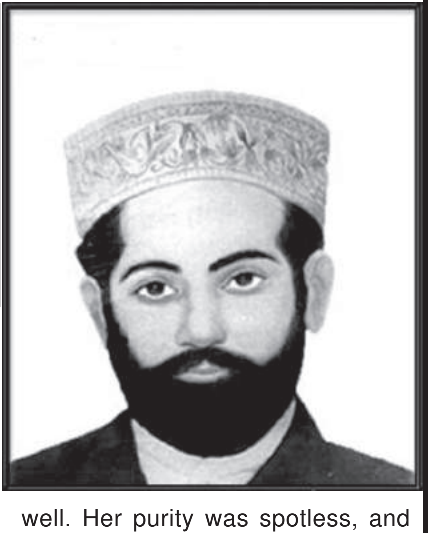

Guru Dutt's mother was the best of mothers. She was an able woman who managed her household very well. Her purity was spotless, and she was much devoted to her husband. Even though he never got more than sixty rupees a month, there was comfortand luxury in the house that a rich man might have envied. It is true she was illiterate, but this did not very much matter. She made up for this by many other virtues. Best of all, she knew how to face troubles. She was never known to lose heart in a time of difficulty.

To be continued......

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

प्रथम पृष्ठ का शेष

महान् धर्म रक्षक, शिक्षाविद्, सद्भावना-.....

प्रारम्भ में वे महर्षि दयानन्द की स्मृति में स्थापित डी.ए.वी कॉलेज की प्रबन्ध व्यवस्था में सहयोग देते रहे, किन्तु जब उन्हें यह आभास हुआ कि इस महाविद्यालय में महर्षि दयानन्द के शिक्षा विषयक आदर्शों को पूरा नहीं किया जा सकता, तो उन्होंने पुरातन शिक्षा प्रणाली को पुनरुज्जीवित करते हुए 1902 में गंगा के तटवर्ती बिजनौर जिले के कांगड़ी ग्राम के अंचल में गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना की और मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से प्राचीन वैदिक शास्त्रों के साथ-साथ पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था की। देश की स्वाधीनता के लिए किए गए प्रयत्नों में भी स्वामीजी का योगदान कम नहीं था। राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में प्रतिनिधि रूप में सम्मिलित होना तो उन्होंने 19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में ही आरम्भ कर दिया था। गाँधीजी के अफ्रीका में किए गए आन्दोलनों से उनकी सहानुभूति थी और 1914 में महात्माजी के भारत आने पर उनका सर्वप्रथम सार्वजनिक स्वागत और अभिनन्दन गुरुकुल कांगाड़ी में वहाँ के आचार्य महात्मा मुंशीराम ने ही किया था।

पं. गोपाल कृष्ण गोखले, लोकमान्य तिलक, पं. मदनमोहन मालवीय तथा लाला लाजपत राय जैसे देशमान्य नेताओं से उनके आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध आजीवन रहे। जब महात्मा गाँधी जी ने 1920 में असहयोग का प्रवर्तन किया तो स्वामीजी ने उसमें भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने दिल्ली की असहयोगी जनता का नेतृत्व किया। हिन्दू-मुसलिम एकता के प्रबल समर्थक स्वामीजी ने दिल्ली की जामा-मस्जिद की वेदी से मानव जाति की मूलभूत एकता का उपदेश दिया। इससे पूर्व जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के बाद हुई अमृतसर काँग्रेस में उन्होंने स्वागताध्यक्ष पद को स्वीकार कर देशवासियों को आश्वस्त किया कि भारतवासी दमन और अत्याचार के आगे झुकने वाले नहीं हैं। कालान्तर में काँग्रेस की मुस्लिम-तोषिणी नीति से असहमत होकर उन्होंने हिन्दू जाति के संगठन, दलितोद्धार तथा विधर्मियों को शुद्धि द्वारा हिन्दू धर्म में पुनः प्रविष्ट कराने के आन्दोलन में गोली के शिकार होकर स्वामीजी ने अमर पद प्राप्त किया।

स्वामी श्रद्धानन्द रचित साहित्य

1916-17 की अवधि में स्वामीजी ने आर्यधर्म ग्रन्थमाला नामक एक ग्रन्थमाला का प्रकाशन किया। इसमें छपे सभी ग्रन्थ स्वयं स्वामीजी के द्वारा लिखे गए थे। इन ग्रन्थों में पादरी लेखक जे.एन फर्कुहर द्वारा आर्य समाज और दयानन्द पर लगाए गए आक्षेपों का उत्तर, पारसी मत और वैदिक धर्म की तुलना तथा मानव धर्म शास्त्र और शासन पद्धति आदि प्रमुख हैं। स्वामीजी 'सद्धर्म प्रचारक' आदि पत्रों में वर्षों तक वेद, उपनिषद् तथा अन्य धर्म ग्रन्थों के अंशों की व्याख्या के साथ प्रकाशित करते रहे थे। बाद में उनके ये धार्मिक प्रवचन 'धर्मोपदेश' शीर्षक से 'स्वाध्याय मंजरी' ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित हुए। स्वामीजी ने महर्षि दयानन्द विषयक शोध कार्य किया। 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' के तृतीयांश का उन्होंने उर्दू अनुवाद किया तथा पूना नगर में 1875 में महर्षि दयानन्द द्वारा दिए गए 'उपदेश मंजरी' शीर्षक व्याख्यानों का उर्दू अनुवाद प्रकाशित किया। 'उपदेश मंजरी' के महत्त्व को उन्होंने विस्तार से रेखांकित किया था।

हिन्दी की भाँति उर्दू ग्रन्थ लिख कर स्वामी श्रद्धानन्द ने इस भाषा को समृद्ध किया। वर्ण-व्यवस्था, क्षात्रधर्म, यज्ञ के मन्त्रों की व्याख्या, अछूतोद्धार, नियोग प्रथा का औचित्य आदि उनके उर्दू ग्रन्थ 'कुलियात संन्यासी' शीर्षक से छपे थे। पौराणिक पण्डित गोपीनाथ द्वारा 'सद्धर्म प्रचारक' के सम्पादक व प्रकाशक पर चलाए गए मानहानि के मुकदमों के विवरण को उन्होंने उर्दू में छपवाया तथा 'दुखी दिल की पुरदर्द दास्ताँ' लिखकर आर्य समाज विषयक अपने अनुभवों को व्यक्त किया। हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद की कहानी, अन्धा इत्तहाद, और खुफिया ज़िहाद, तथा मुहम्मदी साज़िश का इन्क़शाफ आदि उनकी उर्दू कृतियाँ तत्कालीन साम्प्रदायिक मनोवृत्ति वाले लोगों का पर्दाफाश करती हैं।

अंग्रेजी भाषा पर स्वामीजी का असाधारण अधिकार था। The future of the Arya samaj, Hindu Sanghatham, Saviour of the Dying Nation आदि उनकी अंग्रेजी की प्रमुख कृतियाँ हैं। Inside Congres उन राजनीतिक लेखों का संग्रह है जो उन्होंने काँग्रेस में रहकर की गई देश सेवा तथा तज्जन्य कड़वे-मीठे अनुभवों से सम्बन्धित हैं। The Arya samaj and its Detractors, A Vindication में पटियाला में आर्य समाजियों पर चलाए गए उस अभियोग का विस्तृत वर्णन है जो उस रियासत के राजा ने ब्रिटिश नौकरशाहों के कहने में आकर चलाया था। यह ग्रन्थ आचार्य रामदेव के सहलेखन में लिखा गया था। तत्कालीन गोरी सरकार के प्रति आर्य समाज की नीति को इस ग्रन्थ में सतर्क ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

- स्व. प्रो. भवानी लाल भारतीय
नन्दन वन, जोधपुर (राजस्थान)

MDH
हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10, 20 किलो की पैकिंग
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

आनन्द का मार्ग उपासना

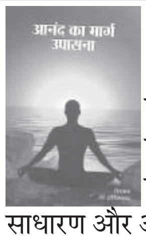

डॉ. हरिशचंद्र (आर्यसमाज, ग्रेटर ह्यूस्टन-अमेरिका) द्वारा लिखित इस पुस्तक में आपने इस पुस्तक में योगदर्शन एवं गायत्री मंत्र की मौलिक व्याख्या अनुपम सरल-सहज शैली में की है। जिसमें ईश्वर उपासना की अनुभूत विधि इतनी स्वभाविक दर्शायी गई है कि वह साधारण और असाधारण दोनों ही श्रेणी के ईश्वर भक्तों को अवश्य लाभान्वित करेगी। पुस्तक के कवर पृष्ठ की साज-सज्जा एवं भीतर पाठय् सामग्री का कागज एवं छपाई तथा अक्षरों की मोटी बनावट सभी सुधी पाठकों के लिए श्रेष्यकर है। **मूल्य:- 40 रुपये। ऑनलाइन प्राप्त करें - https://eshop.thearyasamaj.org**

वैदिक साहित्य विक्रेताओं के लिए विशेष सूचना

ऐसे समस्त महानुभाव जो आर्यसमाज के विभिन्न कार्यक्रमों/वार्षिकोत्सवों में जा-जाकर साहित्य विक्रय का कार्य करते हैं तथा आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य साहित्य नहीं बेचते। अर्थात् जिनकी आजीविका कवेल आर्यसमाज के साहित्य को विभिन्न स्थानों पर होने वाले आयोजनों में जाकर बेचने पर ही निर्भर है, उनके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा विशेष व्यवस्थाएं बनाने का प्रयास कर रही है।

अत: ऐसे समस्त वैदिक साहित्य विक्रेताओं से निवेदन है कि वे योजना का लाभ उठाने के लिए अपना पंजीकरण कराएं। पंजीकरण कराने के लिए एक प्लेन कागज पर आवेदन पत्र के साथ अपना नाम, पता, मोबाईल नं. तथा इस कार्य में आने वाली समस्याओं और उन्हें दूर करने के उपाय/सुझाव लिखकर "**महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001**" के पते पर लिखकर भेजें।

- *महामन्त्री*

शोक समाचार

माता सुमित्रा जी का निधन

वरिष्ठ वैदिक विद्वान आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा जी का 21 दिसम्बर, 2020 को जयपुर में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 22 दिसम्बर को आदर्श नगर अन्त्येष्टि स्थल जयपुर में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री ओम प्रकाश आर्य जी का निधन

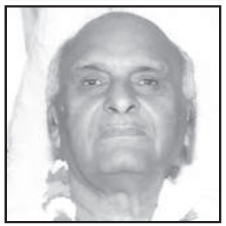

आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1, दिल्ली-110052 के पूर्व मन्त्री श्री ओम प्रकाश आर्य जी का 17 दिसम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ पंजाबी बाग शमशान घाट पर सम्पन्न हुआ।

श्री कृष्णगोपाल जी निधन का निधन

आर्यसमाज दीवान हॉल, चांदनी चौक, दिल्ली के पूर्व प्रधान श्री कृष्णगोपाल दीवान जी का 17 दिसम्बर, 2020 की दोपहर निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ पंजाबी बाग शमशान घाट पर सम्पन्न हुआ।

पण्डिता प्रेमदा लीलाकान्त जी का निधन

आर्यसभा मॉरीशस से सम्बन्धित एवं फलैक प्रान्त की आर्य पुरोहिता पं. प्रेमदा लीलाकान्त जी का 12 दिसम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ मेयर लैचोक्स शमशान भूमि पर किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 21 दिसम्बर, 2020 से रविवार 27 दिसम्बर, 2020
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2018–19–2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 24–25/12/2020 (गुरु–शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018–19–2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 दिसम्बर, 2020

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को शत शत नमन

कौन था वह?

- ★ आर्ष शिक्षा पद्धति पुन: स्थापित कर जिसने मैकाले की शिक्षा– नीति का करारा जबाव दिया।
- ★ जिसे डॉ. अम्बेडकर ने दलितों का सबसे बड़ा मसीहा कहा।
- ★ जिसे महात्मा गाँधी अपना बड़ा भाई कहते थे।
- ★ जिसने चाँदनी चौक में संगीनों के सामने सीना खोलकर अंग्रेजी पुलिस को गोली चलाने के लिए ललकारा था।
- ★ जिसे जामा मस्जिद के मिम्बर और स्वर्ण मन्दिर के अकाल तख्त साहब से प्रवचन करने का गौरव प्राप्त हुआ
- ★ जिसने भारत को लोक अदालतों का विचार दिया।
- ★ जिसने भारतीय स्वामित्व में पहला राष्ट्रीय स्तर का दैनिक अखबार प्रकाशित किया।
- ★ जिसने अमृतसर में जलियाँवाला बाग काण्ड के बाद कॉग्रेस का अधिवेशन करवाने की हिम्मत दिखाई।

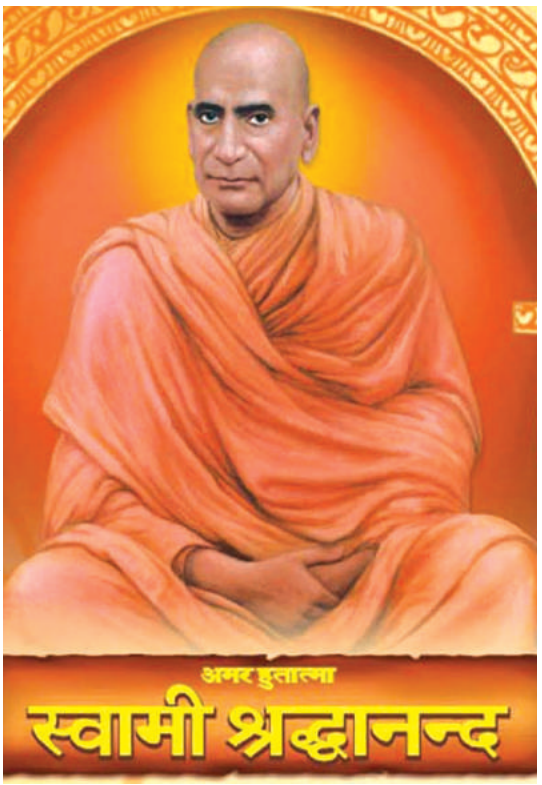

वह था

- ★ 20 वीं सदी का चमत्कारी एवं प्रेरक व्यक्तित्व।
- ★ देश और धर्म पर बलिदानी।
- ★ निर्भीक संपादक।
- ★ गुरुकुल काँगड़ी विश्व विद्यालय, हरिद्वार का संस्थापक।
- ★ साम्प्रदायिक सद्भाव का प्रतीक।
- ★ अपने समय का सर्वाधिक लोकप्रिय नेता।
- ★ दिल्ली का बेताज बादशाह।
- ★ शुद्धि अभियान का प्रणेता।
- ★ महर्षि दयानन्द का उत्तराधिकारी।
- ★ लोक कल्याण के लिए अपनी समस्त सम्पत्ति।
- ★ दान कर देने वाला सर्वत्यागी।

प्रतिष्ठा में,

विश्व का पहला वेद आधारित लाइव टीवी चैनल

ARYA SANDESH TV एप को डाउनलोड करें। एप्प डाउनलोड करने के लिए लिंक पर जाएं –
https://bit.ly/34tP71p
वैदिक धर्म के सन्देश को विश्व में प्रसारित करने के लिए यह सन्देश अधिक से अधिक लोगों को फॉरवर्ड करें एवं एप्प डाउनलोड कराएं।

खुशखबरी! खुशखबरी!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वर्ष 2021 का कैलेण्डर प्रकाशित

ओ३म्
आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि
दयानन्द सरस्वती
2021

मूल्य 1000/–रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/– सैकड़ा) पर उपलब्ध है। साइज 20'×30' सम्पर्क करें–

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष : 011–23360150,
मो. 09540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

जानिये एम डी एच देगी मिर्च की शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता की
सच्चाई
यह मिर्च कर्नाटक में पैदा होती हैं। वहां पर लगभग 1000 औरतें पूरा दिन सिर्फ मिर्च की डंडी उतारने के काम में लगी रहती हैं। उसी मिर्च से देगी मिर्च तैयार होती है।

क्या आप लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला खाना चाहते हैं या बिना लकड़ी (डंडी) वाला मिर्च मसाला?
लकड़ी (डंडी) बिना मिर्च मसाला शुद्धता और स्वाद के गुणों से भरपूर होता है। मसाला लगता भी कम है और स्वाद भी भरपूर आता है। क्योंकि बिना लकड़ी (डंडी) के मिर्च की शुद्धता 20% से भी ज्यादा और बढ़ जाती है। जबकि लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला लगता भी ज्यादा है और स्वाद भी नहीं आता है और तो और यह सेहत के लिये भी नुकसान दायक होता है।
आप खुद ही फैसला कीजिये कि आप कैसा मिर्च मसाला खाना पसंद करेंगे क्योंकि सवाल सिर्फ शुद्धता और स्वाद का ही नहीं आप की सेहत का भी है।
MDH मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच –सच

1919·CELEBRATING·2019
1919·शताब्दी उत्सव·2019
100
Years of affinity till infinity
आत्मीयता अनन्त तक
बिना डंडी के स्पेशल क्वॉलिटी की मिर्चों से तैयार
देगी मिर्च
MDH
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS

ESTD. 1919
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E - mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह